श्रीः

चूहेनामा ।

जिसको

मैनेजर-भार्गव पुस्तकालय ने

16660

निज

भार्गव भूषण प्रेस, त्रिलोचन काशी में मुद्रित

तथा प्रकाशित किया ।

मूल्य)॥

Or... Language Department Panjab
Digitized by:
Panjab Digital Library

Original with:
Language Department Punjab
Digitized by:
Panjab Digital Library

❋ श्रीगणेशायनमः ❋

अथ चूहों का आचार ।

फिर गर्म हुआ आनके बाज़ार चूहोंका । हमने भी किया खौमचा तैयार चूहोंका ॥ सिर पांव कुचल कूटके दो चार चूहोंका । जलदीसे कचूमरसा किया मोर चूहोंका ।

क्या ज़ोर मजेदार है आचार चूहोंका ।
चख देख मेरे यार तू आचार चूहोंका ॥

आगये थे कई अबतो हमी एक चूहे मार । मुद्दतसे इस आचारका करता हूँ व्यौपार ॥ गलियों में ढूंढते फिरते हैं खरीदार । हर तरफसे हैं कौडी रुपयों पैसोंकी बौछार ॥ २ ॥

क्या ज़ोर मजेदार है आचार चूहोंका ।
चख देख मेरे यार तू आचार चूहोंका ॥

Original with:
Language Department Punjab
Digitized by:
Panjab Digital Library

सूखे जिस तरकारीके तलनेको हो दरकार । तो सूखे भी लटकते हैं खूटीप कई हज़ार ॥ कुछ चटनी है तैयार । किस तरह लज्जत है चख देख मेरे यार ॥३॥

क्या ज़ोर मजेदार है आचार चूहोंका ।
चख देख मेरे यार तू आचार चूहोंका ॥

दीमककी दाल मिर्च पड़ी लीकोंकी राई । दुम टांग नली खोपड़ी नस २ है सड़ाई ॥ और चरपरी एक मोरीका कीचड़ही मिलाई । जब ऐसी बनी जोर मजेदार खटाई ॥ ४ ॥

क्या ज़ोर मजेदार है आचार चूहोंका ।
चख देख मेरे यार तू आचार चूहोंका ॥

कुछ केंचुए कुछ नाग हैं काले । भुने हुए चैंटे कई सेर हैं डाले ॥ कुछ मछलियां कुछ मक्खियां कुछ मकड़ीके जाले । इनके सिवा कितने मसाले हैं डाले ।

क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का ।
चख देख मेरे यार तू आचार चूहों का ॥

Original with:
Language Department Punjab
Digitized by:
Panjab Digital Library

कुछ इसमें अकेले न चूहे कई सेर पडे हैं। घूंस और पूछ दरके कई ढेर पड़े हैं॥ जूमच्छर पिस्सू भी कई सेर पडे हैं॥ खाटके खटमल कई सेर पड़े हैं॥

क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का।
चख देख मेरे यार तू आचार चूहोंका॥

अव्वल तो मूसे छटे हुए कदके बड़े हैं। और सेर सवासेर पेढ़क भी पडेहैं॥ चख देख मेरे यार अब कैसे सडे हैं। चालीस बरष बाद अब ऐसे पड़े हैं॥

क्या ज़ोर मजेदार है आचार चूहोंका।
चख देख मेरे यार तू आचार चूहोंका॥

चमगीदड़ अबबीकी आंखें भी पड़ी हैं। उल्लूके पर और गिद्धकी दुम भी पड़ी हैं॥ सिर कउएके और चीलकी आंतें भी पडी। गोबरकी डली बटीकी गाठे भी पड़ी हैं॥

क्या ज़ोर मजेदार है आचार चूहोंका।
चख देख मेरे यार तू आचार चूहोंका॥

Original with:
Language Department Punjab
Digitized by:
Panjab Digital Library

चूहोंका जुदा चूहोंकी मूछोंका जुदा है। सरका जुदा तनका जुदा आखोंका जुदा है ॥ लोटोंमें सड़ी खालका बालोंका जुदा है । प्यालेमें नली सूतका आतोंका जुदा है ॥

क्या ज़ोर मजेदार है आचार चूहोंका।
चख देख मेरे यार तू आचार चूहोंका ॥

अगर पांच रुपये हो तो एक छिपकली लेलो। एक २ असर्फीका छछूंदर सडी लेलो ॥ मत देख घूं सकेतई तरसावोजी लेलो । अजी लेलो अजी लेलो अजी लेलो ॥

क्या ज़ोर मजेदार है आचार चूहोंका।
चख देख मेरे यार तू आचार चूहोंका ॥

चखतेही जबां भरता है ससडबके सड़ीके। शबेरातको जिस तरहसे छूटते हैं पटाके ॥ जब दांततले खोपड़ी भरती है धड़ाके । खुलजाते हैं लज्जतके दिली बीच भड़ाके ॥

Original with:
Language Department Punjab
Digitized by:
Panjab Digital Library

क्या ज़ोर मजेदार है आचार चूहोंका ।
चख देख मेरे यार तू आचार चूहोंका ॥
जो खाते इस आचारको इस पूंछकी झड़ी ।
खुल जावे वो सब उसके दिलोजानकी घंडी ॥
चार घड़ी खुलती है दूकानकी कुंडी ॥ आतीचली हैं मुल्कोंसे हुन्डीपर हुन्डी ॥

क्या ज़ोर मजेदार है आचार चूहोंका ।
चख देख मेरे यार तू आचार चूहोंका ॥

पांचनके ऊपर तो चूरण चचा है । जो खावे तो पेटका पत्थर भी पचा है ॥ तुरसीमें खटाईमें ये अच कैसा रचा है । जो आमका बाबा है तो नीबूका चचा है ॥

क्या ज़ोर मजेदार है आचार चूहोंका ।
चख देख मेरे यार तू आचार चूहोंका ॥

आगे जो बनाथा तो बिका बीस रुपया सेर ।
बर्सातमें यह बिकता है पच्चीस रुपये सेर ॥
और जाड़ोंमें बिकता है यह तीस रुपये सेर ॥

Original with:
Language Department Punjab
Digitized by:
Panjab Digital Library

क्या ज़ोर मज़े दार है आचार चूहोंका ।
चख देख मेरे यार तू आचार चूहोंका ॥

रोजी तो ये हमारी उतारी खुदाने । दिनरात पड़े हमको ये आचार बनाने ॥ और पेटके हैं वास्ते दो पैसे कमाने । लज्जत तो नजीर इसकी खावे वही जाने ।

क्या ज़ोर मज़े दार है आचार चूहोंका ।
चख देख मेरे यार तू आचार चूहोंका ॥

❋ इति ❋

पुस्तक मिलने का पता—

मैनेजर—भार्गव पुस्तकालय,

गायघाट, बनारस सिटी ।

बाबू काशीप्रसाद भार्गव द्वारा, भार्गवभूषण प्रेस, काशी में मुद्रित।

Original with:
Language Department Punjab
Digitized by:
Panjab Digital Library